॥ श्रीः ॥

चौखम्भा संस्कृत भवन ग्रन्थमाला

२१२

भारतीय दर्शन

(भारतवर्ष की विविध दार्शनिक-वैदिक और तान्त्रिक विचारधाराओं का प्रामाणिक विवेचन)

लेखक

आचार्य बलदेव उपाध्याय (पद्मभूषण)

भूतपूर्व सञ्चालक, अनुसन्धान संस्थान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

तथा

पूर्व प्राध्यापक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तावना- लेखक

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज

चौखम्भा संस्कृत भवन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

THE
CHAUKHAMBHA SANSKRIT BHAWAN SERIES
212

BHĀRATĪYA DARŚANA

(An Authentic and Comprehensive Exposition of the Doctrines of the different schools of the Indian Philosophy-Vedic and Tāntric)

Edited & Translated by
ĀCHĀRYA BALADEVA UPĀDHYĀYA
Ex-director, Research Institute,
Sampūrṇānanda Samskṛt Viśvavidyālaya, Varanasi

Foreword by
M.M. GOPĪNĀTHA KAVĪRĀJA

CHAUKHAMBHA SANSKRIT BHAWAN
VARANASI-221001 (INDIA)

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

पृष्ठ संख्या

(१) उपोद्घात १-२६

'दर्शन' का अर्थ तथा उपयोग २, भारतीय दर्शन की कतिपय विशेषताएँ ८, भारतीय दर्शन का लक्ष्य १२, भारतीय दर्शनों का श्रेणी-विभाग १६, भारतीय दर्शनों का काल-विभाग १८, भारतीय दर्शनों की पारस्परिक समानता २० ।

(२) श्रौत दर्शन २७-४८

वेद का महत्त्व २७, वैदिक देवता—हिरण्यगर्भ ३२, पुरुष ३२, स्कम्भ ३३, उच्छिष्ट ३३, अद्वैत की भावना ३४, उपनिषद् ३६, उपनिषद् के सिद्धान्त—आत्मतत्त्व ३६, ब्रह्मतत्त्व ४१, उपनिषदों का व्यवहार पक्ष ४५, उपनिषदों का चरम लक्ष्य ४६ ।

(३) गीता-दर्शन ४९-७२

महाभारत-पूर्व काल ४९, श्रीमद्भगवद्गीता—महत्त्व ५४, स्वरूप ५५ ।

गीता का आध्यात्मपक्ष—ब्रह्म-तत्त्व ५५, प्रकृति ५७, जीव तत्त्व ५८, जगत-तत्त्व ५९, पुरुषोत्तम ६० ।

गीता का व्यवहार पक्ष—विभिन्न मार्गों का सामञ्जस्य ६०, गीता तथा कर्मयोग ६२, गीता तथा ज्ञानयोग ६४, गीता तथा ध्यानयोग ६५, गीता तथा भक्तियोग ६६, समन्वय मार्ग ६७, सिद्धावस्था ६८, गीता का सुलभ साधन ६९, गीता का आदर्श मानव ७१ ।

द्वितीय खण्ड

(४) चार्वाक दर्शन ७५-८९

चार्वाक दर्शन—आरम्भ ७६, नामकरण ७७, संस्थापक ७८, ग्रन्थ ७९ ।

चार्वाक ज्ञान-मीमांसा—प्रत्यक्ष ८०, अनुमान ८०, अनुमान तथा लोक ८०, स्वभाववाद ८१ ।

चार्वाक तत्त्वमीमांसा—जगत् ८२, जीव ८२, ईश्वर ८४।

चार्वाक आचार-मीमांसा—धर्म की अस्वीकृति ८५, आधिभौतिक सुखवाद ८६।

समीक्षा ८७।

(५) जैन दर्शन ९०–११८

जैन धर्म का उदय तथा विस्तार ९०, जैन प्रमाण—साहित्य ९३।

जैन ज्ञानमीमांसा—परोक्ष ज्ञान १००, प्रत्यक्ष ज्ञान १००, स्याद्वाद १०१, नयवाद १०२।

जैन तत्त्व-समीक्षा—वस्तु १०६, द्रव्य १०६, जीव १०९, अजीव ११०।

जैन आचार-मीमांसा—रत्नत्रय ११३, कर्म ११३, पदार्थ ११३, गुणस्थान ११५।

समीक्षा ११६।

(६) बौद्ध दर्शन ११९–१६४

गौतम बुद्ध ११९, बुद्ध की आचार-शिक्षा १२१।

दार्शनिक सिद्धान्त—नैरात्म्यवाद १२६, सन्तानवाद १२७, धार्मिक विकास १२८।

दार्शनिक विकास—परिचय १३२, वैभाषिक सम्प्रदाय १३८, सौत्रान्तिक सम्प्रदाय १४३; योगाचार सम्प्रदाय १४८, माध्यमिक सम्प्रदाय १५४।

समीक्षा १६१।

तृतीय खण्ड

(७) न्याय दर्शन १६७–२१२

नामकरण १६७, न्याय विद्या की उत्पत्ति १६८, न्यायदर्शन के प्रसिद्ध आचार्य १६९।

न्याय प्रमाण-मीमांसा—प्रमा १७६, प्रत्यक्ष १७८, सन्निकर्ष १८०, अनुमान १८२, व्याप्ति १८९, हेत्वाभास १९२, उपमान १९७, शब्द १९८, कार्य-कारण-सिद्धान्त, न्याय और अरस्तू २०१।

न्याय तत्त्व-समीक्षा—प्रमेय २०२, ईश्वर का रूप २०३, ईश्वर-सिद्धि के प्रमाण २०४।

न्याय आचार-मीमांसा—मुक्ति २०७, मुक्ति के रूप २०८, मुक्ति मार्ग २०९।

समीक्षा २१०।

(८) वैशेषिक दर्शन २१३–२५०

नामकरण २१३, वैशेषिक दर्शन के आचार्य २१४, वैशेषिक की प्राचीन व्याख्यायें २१६।

वैशेषिक तत्त्वमीमांसा—द्रव्य २२४, आकाश २२५, काल तथा दिक् २२६, आत्मा २२६, मन २३०, गुण २३१, कर्म २३३, सामान्य २३४, विशेष २३४, समवाय २३६, अभाव २३८, विश्व की सृष्टि २३९, भारत तथा यूनान में परमाणुवाद २४२।

वैशेषिक ज्ञान मीमांसा २४३।

वैशेषिक कर्त्तव्य-मीमांसा—मोक्ष २४५।

समीक्षा २४७।

(९) सांख्य दर्शन २५१–२८३

परिचय २५१, सांख्य दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य २५१।

सांख्य तत्त्व-मीमांसा—सत्कार्यवाद २५६, गुण २६१, पुरुष २६४, विश्व २६६।

सांख्य ज्ञान-मीमांसा—प्रमा २७२, प्रमाण २७४।

सांख्य कर्तव्य शास्त्र—दुःख २७७, विवेक ज्ञान २७८, अपवर्ग २७९, जीवन्मुक्ति एवं विदेह मुक्ति २८०।

समीक्षा २८१।

(१०) योगदर्शन २८४–३०७

परिचय २८४, योग दर्शन के आचार्य २८४।

योग-मनोविज्ञान—चित्त-भूमि २९३, संस्कार २९५, योग २९६, समाधि २९७, क्लेश ३००।

योग कर्तव्य मीमांसा—यम ३०१, नियम ३०१, आसन ३०२, प्राणायाम ३२०, प्रत्याहार ३०२, धारणा ३०३, ध्यान ३०३, समाधि ३०३, कैवल्य प्रकृति ३०४, सिद्धियाँ ३०४, ईश्वर ३०५।

उपसंहार ३०७।

(११) मीमांसा दर्शन २०८–३३५

परिचय २०८, कर्मकाण्ड के सिद्धान्त २०५, मीमांसा का इतिहास २१०, मीमांसा दर्शन के आचार्य—भाट्टमत के आचार्य २११, गुरुमत के आचार्य २१४।

मीमांसा दर्शन की ज्ञानमीमांसा—प्रत्यक्ष तथा अनुमान २१५, उपमान २१६, शब्द २१७, वेद की अपौरुषेयता २१८, अर्थापत्ति २२०, अनुपलब्धि २२१, प्रामाण्यवाद २२२, भ्रमज्ञान २२३।

मीमांसा की तत्त्वमीमांसा—पदार्थ २२५, जगत् २२६, शक्ति २२७, आत्मा २२८।

मीमांसा की आचारमीमांसा—धर्म की कल्पना २२९, देवता २३२, ईश्वर २३३, मोक्ष २३३।

उपसंहार २३५।

(१२) अद्वैत वेदान्त दर्शन २३६–३८४

परिचय २३६, ब्रह्मसूत्र २३७, अद्वैत वेदान्त के प्रमुख आचार्य २३९, अद्वैत वेदान्त का इतिहास २४२।

वेदान्त तत्त्वमीमांसा—आत्मा की स्वयं-सिद्धि २४७, आत्मा की ज्ञानरूपता २४८, आत्मा की अद्वैत-सिद्धि २४९, ब्रह्मविचार २५१, अद्वैत-सिद्धि की युक्ति २५३, विवर्त २५४, माया २५५, ईश्वर २५९, उपास्य ब्रह्म २६१, जीव २६१, जीव और ईश्वर २६३, वेदान्त में जड तत्त्व २६४, वैशेषिक मत का तिरस्कार २६५, बौद्धमत का खण्डन २६६, जगत् २६७, सृष्टि २६९, सत्य २६९, सत्ता २७०, अनिर्वचनीयतावाद २७१, विवर्तवाद २७१, अध्यास २७२।

वेदान्त आचारमीमांसा—कर्म-मार्ग २७४, ज्ञान-कर्म समुच्चय २७५, कर्म-ज्ञान-समसमुच्चय २७६, ज्ञानमार्ग २७७, अध्यारोप विधि २७७, अपरोक्षज्ञान का उदय २७८, आत्मसाधना २७९, आत्मा एवं ब्रह्म की एकता २७९, साधन का मार्ग २८०, मुक्ति के भेद २८१, मुक्ति का रूप २८२, शङ्करमत की मौलिकता २८२।

उपसंहार २८३।

(१३) वैष्णव दर्शन ६८५–४२८

(१) रामानुज दर्शन—आलवार ३८५, आचार्य ३८७; रामानुज की तत्त्व मीमांसा—ईश्वर ३९२, अंश अंशी विचार ३९४, जीव ३९६, सृष्टि ३९७, जगत् ३९८, रामानुज का साधन-मार्ग ३९९।

(२) माध्व दर्शन—आचार्य ४०१, माध्व पदार्थ मीमांसा–पदार्थ ४०३, शक्ति ४०४, परमात्मा ४०४, लक्ष्मी ४०५, जीव ४०५, माध्व का साधन-मार्ग ४०६।

(३) निम्बार्क दर्शन—आचार्य ४०७, निम्बार्क की पदार्थ-मीमांसा—जीव ४०८, जड तत्त्व ४१०, निह्वर ४११, निम्बार्क का साधन-मार्ग ४१२।

(४) वल्लभ दर्शन—आचार्य ४१३, बल्लभाचार्य के सिद्धान्त—ब्रह्म ४१४, लीला का रहस्य ४१५, जीव ४१७, जगत् ४१८, पुष्टिमार्ग ४१९।

(५) चैतन्य दर्शन—आचार्य ४२१, साध्यतत्त्व—भगवान् ४२३, भगवान् की शक्तियाँ ४२४, जगत् ४२५, चैतन्य का साधन-मार्ग ४२५।

उपसंहार ४२७।

चतुर्थ खण्ड

तन्त्र-मत का इतिहास

(१४) वैष्णव तन्त्र ४३१–४६४

तन्त्रों का परिचय

तान्त्रिक साधना ४३१; तन्त्र का अर्थ ४३२; कलियुग में तन्त्र का प्राधान्य ४३४; तन्त्र: विज्ञान ४३६; आगम–निगम ४३७; तन्त्र की प्राचीनता ४३८; तान्त्रिक आचार—समयाचार ४४०; कौलाचार ४४०; तन्त्र की प्रामाणिकता ४४१; तान्त्रिक संस्कृति ४४२; तन्त्रभेद ४४८।

वैष्णव तन्त्र

परिचय ४४९; पाञ्चरात्र और वेद ४५०।

पाञ्चरात्र की तत्त्वमीमांसा—षाड्गुण्य ४५३, शुद्ध सृष्टि ४५४, जीव तत्त्व।

पाञ्चरात्र का साधन-मार्ग—शरणागति ४५७, मोक्ष ४५८, वैखानस आगम—परिचय ४५८, सिद्धान्त ४६०।

श्रीमद्भागवत—परिचय ४६१; श्रीमद्भागवत का साध्यपक्ष ४६१, श्रीमद्भागवत का साधनमार्ग ४६३।

(१५) शैव—शाक्त तन्त्र ४६५–५२७

इतिहास एवं साहित्य

परिचय ४६५; पाशुपत मत ४६६; पाशुपत साहित्य; शैव सिद्धान्त मत ४७७; शैवाचार्य; वीर शैव मत ४७९; प्रत्यभिज्ञा शास्त्र ४७४; शाक्त तन्त्र; शाक्त पूजा केन्द्र ४७७; शाक्त तन्त्र के आचार्य ४७८।

सिद्धान्त

(१) शैव दर्शन

(i) पाशुपत—पदार्थ ४७९, क्रियाशक्ति ४७१।

(ii) कापालिक एवं कालामुख—रसेश्वर दर्शन ४८२; व्याकरण दर्शन ४८३।

(iii) वीर शैव—शक्ति ४८६; जगत् ४८७, सृष्टि ४८७, जीव ४८८, शिव तत्त्व ४८९।

(iv) शैव सिद्धान्त—पति ४९१, पशु ४९२, पाश ४९३, साधन-मार्ग ४९४।

(v) प्रत्यभिज्ञा दर्शन—परमतत्त्व ४९५, ईश्वराद्वयवाद ४९७, छत्तीस तत्त्व ४९९, परम तत्त्व का स्वरूप ५०१, साधनमार्ग ५०३, ब्रह्मवाद एवं ईश्वराद्वयवाद में भेद ५०४, बन्धन और मोक्ष ५०५।

(vi) क्रम दर्शन—साहित्य ५०९, सिद्धान्त ५१०, परतत्त्व ५११।

(२) शाक्त दर्शन (कौल दर्शन)

'कुल' शब्द का अर्थ ५१५, आगम साहित्य ५१७, कुलाचार ५२०, दार्शनिक विचार ५२१, श्री चक्र ५२३, अनुत्तर तत्त्व ५२४. त्रिपुरा सिद्धान्त ५२६।

(१६) उपसंहार ५२८–५३४

भारतीय दर्शनों में समन्वय ५२८; दर्शनों का विकास ५२९, भारतीय दर्शन का भविष्य ५३३।

परिशिष्ट खण्ड (टिप्पणियाँ)

उपोद्घात ५३७-५४६

भारतीय दर्शन की व्यापक दृष्टि ५३७; भारतीय दर्शन पर मिथ्या आरोप ५३६, श्रुति और तर्क ५४०, भारतीय दर्शन का विकास ५४२, षड्दर्शन का विकास क्रम ५४३, बौद्ध दर्शन का उदय ५४४, जैन दर्शन की उत्पत्ति ५४५, दार्शनिक साहित्य का विकास ५४५।

श्रौत दर्शन ५४७-५५६

वैदिक देवता ५४७, देवता तत्त्व ५४८, ऋत ५५०, देवता के द्विविध रूप ५५०, 'आत्मन्' की व्युत्पत्ति ५५२, शुद्ध आत्मा की चैतन्य स्वरूपता ५५२, ब्रह्म के द्विविध लक्षण—स्वरूप लक्षण, तटस्थ लक्षण ५५४, विविध यान ५५५।

चार्वाक दर्शन ५५५-६६१

'वैतण्डिक' का अर्थ ५५६, रामायण में लोकायत मत ५५६, 'चार्वाक' का अर्थ ५५७, चार्वाकी दृष्टि में अनुमान ५५७, उदयन द्वारा चार्वाक का खण्डन ५५६, पाश्चात्य दर्शन और चार्वाक मत ५६०।

बौद्ध दर्शन ५६२-५८१

बौद्ध धर्म का विकास—धार्मिक सम्प्रदाय ५६२, महासंघिक, सर्वास्तिवादी, सम्मितीय, वैपुल्यवादी के सिद्धान्त ५६३, बोधिसत्त्व की क्रमिक शिक्षा ५६४, आलय-विज्ञान का स्वरूप ५६६, विविध मत ५६६, परमतत्त्व ५६७, सत्य का द्वैविध्य ५६७, 'संवृत्ति' की व्युत्पत्ति ५६७, क्षणिकवाद का न्यायमञ्जरी में खण्डन ५६८, वासना का खण्डन ५६८।

निर्वाण का रूप—निर्वाण = निरोध ५६८, हीनयानी निर्वाण ५७१, हीनयानी निर्वाण तथा नैयायिक मुक्ति ५७३, महायानी निर्वाण ५७४, दोनों मत में निर्वाण का पार्थक्य ५७७, निर्वाण का परिनिष्ठित रूप ५७६, सांख्य-वेदान्त की मुक्ति से निर्वाण की तुलना ५८०, वेदान्त में मुक्तिकल्पना ५८१।

न्याय दर्शन ५८२-५८६

आन्वीक्षिकी का अर्थ ५८२, योगिप्रत्यक्ष ५८३, व्याप्ति की परीक्षा—बौद्ध दृष्टि ५८४, वेदान्त दृष्टि ५८४ आकाङ्क्षादिसाधन

५८५, कार्यकारण का लक्षण तथा परस्पर सम्बन्ध ५८५, उदयन की ईश्वर-सिद्धि-युक्ति ५८६, न्याय मत में प्रवृत्ति का विचार ५८७, मुक्त आत्मा का रूप ५८८, मोक्ष का द्विविध रूप ५८९।

वैशेषिक दर्शन ५९०–५९९

तम का द्रव्यत्व-परिहार ५९०, शरीर से आत्मा की भिन्नता ५९१, आत्मा का अनुभव ५९२, जाति तथा उपाधि का अन्तर ५९३, न्याय तथा वैशेषिक मत में अन्तर ५९५, अभाव की कल्पना ५९६, वैशेषिक मत में ईश्वर ५९७, बौद्धों के द्वारा जाति खण्डन ५९८।

सांख्य दर्शन ६००–६१२

सांख्य का अर्थ ६००, सांख्य का उद्गम तथा विकास ६०१, सांख्य की आचार्य-परम्परा ६०३, व्यासभाष्य में प्रकृति का स्वरूप ६०४, गुणों का रूप और परिणाम ६०५, काल की कल्पना ६०६, शरीर की कल्पना ६०७, 'अनुभव' की प्रक्रिया ६०८, सांख्य-मत में भ्रमज्ञान तथा प्रामाण्यवाद ६०८, सांख्य मत में अहिंसा तत्त्व ६१०, सांख्य मत में ईश्वर ६११।

योग दर्शन ६१३–६२६

संहिता तथा ब्राह्मणों में योग ६१३, उपनिषदों में योग ६१४, व्यासभाष्य का रचनाकाल ६१४, असम्प्रज्ञात-समाधि के भेद ६१६, वैराग्य के प्रकार ६१७, योगी के प्रकार ६१८, निर्माण-काय की सिद्धि ६२०, निर्माणचित्त की उत्पत्ति ६२४।

मीमांसा दर्शन ६२७–६३६

मीमांसा की प्राचीनता ६२७, कुमारिल का मत ६२८, प्रमा का लक्षण ६२८, प्रमाण का लक्षण ६२८, वेद की अपौरुषेयता ६२८, स्फोट का खण्डन ६२९, मीमांसा में प्रामाण्यवाद ६३०, भ्रम के विषय में प्रभाकर मत ६३१, मुरारि मिश्र का पदार्थ-भेद ६३२, अणुवाद ६३२, आत्मा के विविध कर्म, भावना का रूप तथा भेद ६३३, मीमांसा में कर्मयोग एवं ईश्वर ६३४, मुक्त दशा में आनन्द की सत्ता ६३५।

अद्वैत वेदान्त ६३७–६४८

उपनिषदों में 'वेदान्त' शब्द ६३७, आत्मा ज्ञानस्वरूप ६३८, सत्यं ज्ञानमनन्तम् का अर्थ ६३९, माया एवं अविद्या का रूप ६४०, ईश्वर की लीला ६४१, जाग्रत् और स्वप्न में अन्तर ६४२, ज्ञान

तथा कर्म का उद्देश्य ६४४, वेदान्त में बीजगणितीय प्रक्रिया ६४५, लक्षणा का रूप और भेद ६४५, शंकर के अनन्तर वेदान्त मत ४४६, आभासवाद ६४७, प्रतिबिम्बवाद ६४८, अवच्छेदवाद ६४८, एकजीववाद ६४८।

वैष्णव दर्शन ६४९–६६३

शुद्धतत्त्व के विषय में मतभेद ६५०, भक्ति का उदय ६५१, शरणागति ६५२, भेदाभेद की ऐतिहासिक परम्परा—भर्तृप्रपञ्च ६५४, भास्कर का मत ६५५, यादव का सिद्धान्त ६५७, भगवान का अवतार—हेतु ६५९; पुष्टिमार्ग की विशेषता ६६१, सन्धिनी ६६२, जगत् की सत्यता ६३६, "अचिन्त्यभेदाभेद" का ६६३।

वैष्णव तन्त्र ६६४–६७५

कौल सम्प्रदाय ६६६, 'समय' तथा 'समयाचार' ६६६, पञ्च मकार का रहस्य ६६७, तन्त्र की स्मृतिरूपता ६६९, 'सात्वत' का अर्थ ६७१, भगवान् का पुरुषावतार ५७३, ज्ञानमार्ग में क्लेश ६७४।

शैव-शाक्त तन्त्र ६७६–६८८

तन्त्रों के भेद तथा विस्तार ६७६, तान्त्रिक पूजा के केन्द्र ६७७, 'पशु' का अर्थ ६७८, भर्तृहरि—मत में त्रयी वाक् ६७९, शक्ति की नित्यता ६८०।

उपसंहार ६८८–६९०

अभेद ही शास्त्र का तात्पर्य ६८८, दर्शनों में क्रमिक विकास ६८९।

वैष्णव दर्शन ६९१–७१६

श्रीकृष्ण तत्त्व—श्रीकृष्ण का पूर्ण व्यक्तित्व ६९१, वेणुनाद का माधुर्य ६९३, रूप माधुर्य ६९४, कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ६९४, राधा = ह्लादिनी शक्ति ६९८, परमधाम = नित्य वृन्दावन ७००, दो विभूतियाँ-एकपाद विभूति-त्रिपादविभूति–७०१; वैकुण्ठ धाम ७०३, राधा का प्राकृत परिचय ७०४, उपनिषदों में राधा ७०६, राधा-तत्त्व विमर्श ७०९, रासलीला का रहस्य ७११, आध्यात्मिक रासलीला ७१३,

प्रमाण-ग्रन्थावली ७१७–७२४

अनुक्रमणिका ७२५–७४८

संकेत सूची

अभि० को० = अभिधर्मकोष
अहि० सं० = अहिर्बुध्न्य संहिता
ऐत० उप० = ऐतरेय उपनिषद्
ऐत० आर० = ऐतरेय आरण्यक
किरणा० = किरणावली
कौषी० = कौषितकी उपनिषद्
छा० उप० = छान्दोग्य उपनिषद्
त० कौ० = तत्त्व कौमुदी
त० वै० = तत्ववैशारदी
त० सू० = तत्त्वार्थसूत्र
ता० टी० = तात्पर्य टीका
तैत्ति० भा० = तैत्तिरीयभाष्य
दी० नि० = दीर्घनिकाय
न्या० क० = न्यायकन्दली
न्या० भा० = न्यायभाष्य
न्या० मं० = न्यायमंजरी
न्या० सू० = न्यायसूत्र
प्र० पा० भा० = प्रशस्तपादभाष्य
बृ० सू० = बृहस्पतिसूत्र
ब्र० सू० = ब्रह्मसूत्र
भा० भा० = भास्करभाष्य
भा० प० = भाषा परिच्छेद
म० सि० सा = मध्वसिद्धान्तसार
मा० का० = माण्डूक्यकारिका
मा० मे० = मानमेयोदय
मि० प्र० = मिलिन्दप्रश्न
मी० सू० = मीमांसासूत्र
मुक्ता० = मुक्तावली
मु० उप० = मुण्डक उपनिषद्
यो० भा० = योगभाष्य
यो० सू० = योगसूत्र
वा० प० = वाक्यपदीय
व्या० भा० = व्यासभाष्य
वे० प० = वेदान्तपरिभाषा
वे० सा० = वेदान्तसार
वै० सू० = वैशेषिकसूत्र
श्लो० वा० = श्लोकवार्तिक
शा० भा० = शाङ्करभाष्य
शा० भा० = शारीरकभाष्य
शा० दी० = शास्त्रदीपिका
स० द० सं० = सर्व-दर्शन-संग्रह
सां० का० = सांख्यकारिका